

# रविवार व्रत कथा PDF

एक बूढ़ी औरत थी। उसका नियम था कि वह प्रत्येक रविवार की सुबह स्नान आदि करके घर को गाय के गोबर से लीपती, फिर भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाकर स्वयं भोजन करती थी। ऐसा व्रत करने से उसका घर नाना प्रकार के धन-धान्य से भर जाता था। श्री हरि की कृपा से घर में किसी प्रकार का क्लेश या क्लेश नहीं होता था। घर में हर तरह से आनंद छा गया। इस तरह कुछ दिन बीतने के बाद उसकी एक पड़ोसन जिसकी गाय का गोबर लाती थी वह सोचने लगी कि यह बुढ़िया हमेशा मेरी गाय का गोबर लेती है।

बुढ़िया की वजह से वह अपनी गाय को घर के अंदर बांधने लगी और उस बुढ़िया को गोबर नहीं मिला इसलिए वह रविवार के दिन अपने घर की सफाई नहीं कर पाई और इस वजह से उसने भोजन नहीं बनाया और न ही भगवान को भोग लगाया और स्वयं भी भोजन नहीं किया। इस प्रकार उन्होंने बिना भोजन के उपवास किया। रात हो गई थी इस वजह से वह भूखी सोई थी रात को भगवान उसके सपने में आए और उससे पूछा कि तुमने भोजन क्यों नहीं बनाया और मुझे भोग क्यों नहीं लगाया बुढ़िया ने भगवान को बताते हुए कहा कि मुझे गाय का गोबर नहीं मिला तो भगवान ने कहा कि माता हम आपको ऐसी गाय देते हैं जो आपकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। क्योंकि तुम हमेशा रविवार को गाय के गोबर से लीपकर और मुझे अर्पण करके स्वयं भोजन करते हो।

मैं इससे प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देता हूँ। मैं दरिद्रों को धन और बांझ को पुत्र देकर दुःखों को दूर करके अंत में मोक्ष देता हूँ। स्वप्न में ऐसा वरदान देकर भगवान अंतर्धान हो गए और जब बुढ़िया ने आंखें खोलीं तो देखा कि आंगन में एक अत्यंत सुंदर गाय और बछड़ा बंधा हुआ है। गाय और बछड़े को देखकर वह बहुत खुश हुई और उन्हें घर के बाहर बांध दिया और वहां चारा डाल दिया।

जब उसकी पड़ोसन की बुढ़िया ने घर के बाहर एक अति सुंदर गाय और बछड़े को देखा तो उसका हृदय क्रोध से जल उठा और उसने देखा कि गाय ने सोने का गोबर किया है तो उसने उस गाय का गोबर ले लिया और उसकी जगह अपनी गाय का गोबर डाल दिया। वह रोज ऐसा ही करती रही और भोली बुढ़िया को इस बात का पता नहीं चलने दिया। तब सर्वव्यापी भगवान ने सोचा कि बुढ़िया चतुर पड़ोसी के काम से ठगी जा रही है, इसलिए भगवान ने अपनी माया से शाम को बड़ी ताकत का तूफान खड़ा कर दिया।

बुढ़िया ने आंधी के डर से अपनी गाय को अंदर बांध लिया। प्रातःकाल जब वृद्धा ने देखा कि गाय ने सोने का गोबर दिया है तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही और वह प्रतिदिन गाय को घर के भीतर बांधने लगी। उधर पड़ोसन ने देखा कि बुढ़िया गाय को घर के अन्दर बांधने लगी है और वह गाय का गोबर नहीं उठा पा रही थी तो उसे जलन और जलन होने लगी और कोई उपाय न देख कर पड़ोसन राजा की सभा में गई। उस देश की और कहा, महाराज, मेरी पड़ोस की एक बुढ़िया के पास ऐसी गाय है जो आप जैसे राजाओं के योग्य है, वह प्रतिदिन सोने का गोबर देती है। आप उस सोने से लोगों का ख्याल रखते हैं। वह बुढ़िया इतने सोने का क्या करेगी? यह सुनकर राजा ने अपने दूतों को बुढ़िया के घर से गाय लाने का आदेश दिया।

बुढ़िया सुबह भगवान को चढ़ाया हुआ भोजन ग्रहण करने ही वाली थी कि राजा के सेवक गाय को उठा ले गए। बुढ़िया बहुत रोई लेकिन कर्मचारियों के सामने कोई क्या कहेगा। उस दिन गाय के अलग हो जाने के कारण बुढ़िया भोजन नहीं कर सकी और रात भर भगवान से गाय को वापस पाने की प्रार्थना करती रही। दूसरी ओर, गाय को देखकर राजा बहुत खुश हुआ, लेकिन जैसे ही वह सुबह उठा, पूरा महल गाय के गोबर से भरा हुआ दिखाई दिया। यह देखकर राजा डर गया। भगवान ने राजा को रात को स्वप्न में बताया कि हे राजा। बूढ़ी गाय को लौटा देना आपके लिए अच्छा है। उसके रविवार के व्रत से प्रसन्न होकर मैंने उसे एक गाय दी।

सबेरा होते ही राजा ने बुढ़िया को बुलाकर गाय के बछड़े को बहुत सा धन समेत आदर सहित लौटा दिया। उसके पड़ोसी को बुलाया और उसे उचित दंड दिया। ऐसा करने के बाद राजा के महल से गंदगी हटा दी गई। उस दिन से राजा ने नगरवासियों को राज्य के लिए उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए रविवार का व्रत रखने का आदेश दिया। व्रत करने से नगर के लोग सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। उस नगर पर कोई रोग या प्रकृति का प्रकोप नहीं था। सभी लोग सुख से रहने लगे।